THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI JANARDHAN POOJARI): (a) According to provisional data available, the advances of public sector banks (S. B. I. Group+20 Nationalised Banks stood as Rs. 47495 crores as at the end of December, 1985.

(b) The total amount of good debts against the personal security of the debtor was Rs. 5631.05 crores in respect of all the public sector banks as be end of December, 1985. The debts which are considered by the bank management as ultimately unrecoverable are written off from out of the provisions made by banks out of their annual income for meeting their liability towards bad and doubtful debts. According to the forms of Balance Sheet and Profit & Loss Account prescribed in the Third Schedule of the Banking Regulation Act, 1949, which all banks are required to follow strictly, the banks are given statutory protection from disclosing the quantum of bad and doubtful debts for which the provision is made.

(c) The present system of maintaining statistics does not yield separate information for the frauds involving over Rs. 1 lakh and above. However, information of last three years relating to number of frauds detected in public sector banks and the amount involved therein is set out below:—

Year	No. of Frauds	Amount involved (Rs. *in crores*)
1983 . . .	2371	30·21
1984 . . .	2469	40·86
1985 . . .	2189	114·62

Note:—Data are provisional.

गेहूं आदि का निर्यात

1349. **श्री बगदम्बी प्रसाद यादव** : क्या **वाणिज्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) चालू वर्ष के दौरान अब तक कितना और किन-किन देशों को गेहूं का निर्यात किया गया ;

(ख) गत वर्ष के आंकड़े क्या थे और इस बारे में भविष्य के लिए योजना क्या है ;

(ग) गत तीन वर्षों के दौरान वर्ष-वार चावल के अलावा अन्य किन-किन वस्तुओं का कितनी कितनी मात्रा में निर्यात किया गया ; और

(घ) उन देशों के नाम क्या हैं जिनसे चावल तथा अन्य खाद्य पदार्थों का आयात किया जा रहा है और उनकी रुपयों में कीमत कितनी है ?

वाणिज्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री बूटा सिंह) : (क) 1986-87 (जून 1986 तक) के दौरान 2,000 मैं. टन गेहूं उपहार के रूप में निकाराग्वा को तथा 2,000 मैं. टन. गेहूं नेपाल को निर्यात किया गया ।

(ख) 1985-86 के दौरान 3·37 लाख मैं. टन गेहूं निर्यात किया गया । इस वर्ष वियतनाम को वस्तु ऋण के रूप में एक लाख मैं. टन निर्यात करने के लिये तथा डोमिनिका को 50,000 मैं. टन कोरिया लोकतंत्रीय जनवादी गणराज्य को 1,10,000मैं. टन तथा नेपाल को 30,000 मैं. टन की बिक्री के लिए करार सम्पन्न किए गए हैं ।

(ग) 1983-84, 1984-85 तथा 1985-86 के दौरान क्रमशः 1·42 लाख मैं. टन, 2·42 लाख मैं. टन, तथा 2·35 लाख मैं. टन बासमती चावल का निर्यात किया गया । 1985-86 के दौरान उपहार के रूप में मारीशस को 10,000 मैं. टन मैदा तथा 200 मैं. टन दाल निर्यात की गई । 1985-86 के दौरान 12,457 मैं. टन मोटे अनाज का निर्यात होने का अनन्तिम अनुमान है ।

(घ) सरकारी खाते में कोई गेहूं अथवा चावल आयात नहीं किया जा रहा है । तथापि, चरते कमियों को ध्यान में रखते हुए सरकार ने खुले सामान्य लाइसेंस (ओ. जी. एल.) के अन्तर्गत दलहन के आयात की अनुमति दी है ।

Housing schemes for beedi workers

1350. SHRIMATI RATAN KUMARI: Will the Minister of LABOUR be pleased to state:

(a) whether it is a fact that an amount of Rs. 5.80 lakhs was spent under the "Build your own housing scheme" for beedi workers during 1985-86 while only